सी-डैक
CDAC

सूत्रपात

वार्षिक पत्रिका

अंक-12

2025

प्रगत संगणन विकास केन्द्र, मोहाली

सी-डैक मोहाली

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(9 सितंबर 1850 - 6 जनवरी 1885)
आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।

भावार्थः

निज यानी अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है, क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है।
मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है।
विभिन्न प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार का ज्ञान, सभी देशों से जरूर लेने चाहिए, परन्तु उनका प्रचार मातृभाषा के द्वारा ही करना चाहिए।

वार्षिक गृह पत्रिका – 2025
अंक – 12

इस अंक में

सन्देश

श्री वी. के. शर्मा
केंद्र प्रमुख एवं अध्यक्ष
(राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

सम्पादकीय

डॉ. सुनीत मदान

संपादक मंडल

श्री कुलदीप कुमार द्विवेदी
श्री शैलेश सिंह
सुश्री अनु आहूजा
श्री राज कुमार

कवर डिज़ाइन

सुश्री प्रीतिका

निःशुल्क वितरण के लिए

नोटः प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक एवं सूत्रपात संपादक मंडल की पूर्व अनुमति आवश्यक है।
सूत्रपात में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के अपने हैं
संपादक मंडल का सबसे सहमत होना आवश्यक नहीं है । रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी
विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा ।

अनुक्रम

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	**केन्द्र प्रमुख का संदेश**	3
2	**सम्पादक की कलम से**	5
3	**अपना मानसिक स्विच ऑन रखें** – कुलदीप कुमार द्विवेदी	7
4	**आओ बढ़ाएँ एक कदम स्वच्छता की ओर** – दलजीत सिंह जॉली	11
5	**रेत से सिलिकॉन** – डॉ. कोमल	15
6	**क्या होगा सच में उन्मूलन** – सुनील कुमार शर्मा	16
7	**बस खामोश हूँ** – हिमानी	18
8	**नारीः वही माँ, वही शक्ति** – खुशी राठौर	19
9	**निन्जा तकनीक** – मोहित मिश्रा	20
10	**महाकालेश्वर तथा ओंकारेश्वर तीर्थ मंदिरों के दर्शन** – पुनीत अरोड़ा	21
11	**बचपन का रोमांचक सप्ताह** – रामस्वरूप	24
12	**कविता लिखूँ** – यशार्थ सिंह	27
13	**हमारी प्यारी हिन्दी** – हरप्रीत कौर	28
14	**मर्यादा** – आशा रानी	29
15	**मेरे विचार – राजभाषा के रूप में हिन्दी** – राज कुमार	30
16	**हिंदी – मातृभाषा** – पुनीत अरोड़ा	32
17	**माँ** – सोनिया	37
18	**स्वच्छ भारत अभियान** – दलजीत सिंह जॉली	38
19	**गाँव** – यशार्थ सिंह	39
20	**जमाने लगे है बेटियों को** – सोनिया	40
21	**पहली उड़ान** – यशस्वी शर्मा	41
22	**मेरी यात्रा** – मानव सिंह	43
23	**कृत्रिम बुद्धिमत्ता** – संजय खंडेलवाल	45
24	**मेरा लाल भी रण में उतरेगा** – रमेश चंद तंवर	49

केन्द्र प्रमुख का संदेश

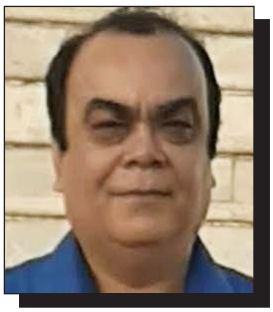

सी–डैक, मोहाली की वार्षिक हिंदी पत्रिका ''सूत्रपात'' के वर्ष 2025–26 (12वें अंक) की प्रति प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

राजभाषा के प्रचार –प्रसार में इन विभागीय पत्रिकाओं का अत्यंत महत्व होता है। पत्रिकाओं के द्वारा केंद्र के अधिकारियों / कर्मचारियों में हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ता है तथा उनमें केंद्र के कार्यों में भी हिंदी को अपनाने की रुचि पैदा होती है । पत्रिका में विभिन्न विषयों से सम्बंधित ज्ञानवर्धक, रोचक व मनोरंजक रचनाओं को सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है । पत्रिका के प्रकाशन हेतु लेख एवं रचनाएं देने वाले सभी अधिकारियों / कर्मचारियों व संपादक मंडल को पत्रिका की सफलता हेतु हार्दिक शुभ कामनाएं जिनके सम्मिलित प्रयास द्वारा ही पत्रिका के प्रकाशन का कार्य संभव हो पाया है । मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी उनका सहयोग इसी तरह प्राप्त होता रहेगा ।

आपसे अनुरोध है कि पत्रिका के सम्बन्ध में अपने सुविचारों एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं। आपके सुविचार / प्रतिक्रिया हमारे लिए मार्गदर्शक का कार्य करेंगे ।

हार्दिक शुभ कामनाएं!

वी के शर्मा
केन्द्र प्रमुख
सी–डैक , मोहाली

सम्पादक की कलम से.....

सी–डैक, मोहाली की वार्षिक गृह पत्रिका सूत्रपात 2025 के संस्करण को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त खुशी का अहसास हो रहा है। मैं अपने सभी सहयोगियों और सम्पादक मंडल का आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने इस वार्षिक गृह पत्रिका के प्रकाशन में अपना सहयोग दिया। इस पत्रिका में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अलावा उनके पारिवारिक सदस्यों ने भी अपने लेखों, कविताओं, चित्रों आदि के माध्यम से बहुमूल्य योगदान दिया है, जिसमें उनका स्नेह और हिन्दी के प्रति उनका अपार लगाव झलकता है। मैं उनके इस स्नेह के लिए भी आभार प्रकट करती हूं कि उन्होंने हमारे इस संस्करण के लिए अपना बहुमूल्य समय दिया।

इस पत्रिका में सरल से सरल हिन्दी के शब्दों का प्रयोग किया गया है ताकि हमारे पाठकों को समझने में सुविधा हो। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाओं को यथावत रखने का प्रयास किया गया है ताकि हमारे पाठकों को पढ़ने एवं समझने में कोई परेशानी न हो।

सी–डैक मोहाली राजभाषा कार्यान्वयन समिति का हमेशा यही प्रयत्न रहता है कि कार्यालय के सभी अनुभागों के दैनिक कार्यों में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग हो। कार्यालय के सभी अनुभागों में हिन्दी के अधिकतम प्रयोग के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति निरंतर प्रयत्नशील रहती है। हमें आशा है कि सभी को सूत्रपात 2025 का यह अंक हमेशा की तरह बहुत पंसद आएगा तथा भविष्य में भी पत्रिका के लिए अपने संकलन एवं इसके सुधार के लिए निरंतर सुझाव देते रहेंगे।

अन्ततः मैं अध्यक्ष, हिन्दी राजभाषा कार्यान्वयन समिति का आभार प्रकट करना चाहती हूं, जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं भरपूर समर्थन दिया।

डा. सुनीत मदान
उपाध्यक्षा–राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अपना मानसिक स्विच ऑन रखें

सभी लोगों का मकसद जीवन में खुशी प्राप्त करना होता है। इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो कामयाबी के शिखर को नहीं छूना चाहता। सभी को सफलता और उपलब्धियां प्रिय हैं तो फिर क्या कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति खुशी और कामयाबी हासिल नहीं कर पाता ? सुख, सन्तुष्टि एवं सफलता पाना सबका लक्ष्य होते हुए भी सब इसे प्राप्त नहीं कर पाते और सबसे ज्यादा हैरानी की बात यह है कि अधिकतर लोगों में ज्ञान की कोई कमी नहीं होती। ज्ञान होते हुए भी उसकी झलक उनकी जिन्दगी एवं उनके व्यवहार में नजर क्यों नहीं आती। क्या कारण है कि लोगों के अन्दर अपार प्रतिभा के बावजूद वे उस शिखर तक नहीं पहुँच पाते जहां उन्हें होना चाहिए था ? क्यों कुछ लोगों की हालत उस भिखारी जैसी होती है जो सारी जिन्दगी जहां बैठ कर भीख मांगता रहा, उसके मरने के बाद उसी जगह से करोड़ों का खजाना मिला ? ऐसा क्यों ?

इस सवाल का जवाब मुझे तब मिला जब एक बार अचानक रात में सिर्फ हमारे घर की बिजली गुल हो गई। मुझे एक सेमिनार में कही गई बात याद आ गई। उसके अनुसार लोगों की असफलता की वजह उनमें ज्ञान की कमी नहीं बल्कि छोटी–छोटी बातों में उनके 'मानसिक स्विच' का ट्रिप हो जाना है।

आपने भी देखा होगा जब आपके घर या दफ्तर में कभी–कभी मेन स्विच ऑफ हो जाता है तो सारी लाइटें, पंखें, एअरकंडीशनर तथा मशीनरी आदि बन्द हो जाती हैं। सब चीजें रहती तो अपनी जगह पर ही हैं, दिखती भी वैसी ही हैं पर काम नहीं करतीं। एक स्विच के ऑफ हो जाने से सब बन्द हो जाता है, कुछ काम नहीं करता।

इसी तरह जब कभी हमारे जीवन में भी तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है तो हमारा मानसिक स्विच भी ट्रिप हो जाता है। हम अजीब सा अप्रत्याशित व्यवहार करने लगते हैं। उदाहरण के लिए, आपने भी देखा होगा कि कभी–कभी बॉस या ग्राहक से डांट सुनने पर अक्सर लोगों का कहना होता है ''यार, मूड खराब हो गया'' या ''आज मूड बड़ा खराब है''। उनके शब्दों से यह पता चलता है कि उनका मानसिक स्विच ट्रिप हो गया है। ऐसे लोगों को मेरा सुझाव है कि जब उन्हें पता चलता है कि मूड खराब है तो क्यों न उसे ठीक कर लिया जाए। जब आपके घर में बिजली का स्विच भी ट्रिप हो जाता है तो हम क्या करते हैं ? क्या हम पड़ोसियों का भी फ्यूज निकाल देते है ? यदि हमारी कमीज कहीं से गन्दी हो जाए तो क्या हम अपनी कमीज को साफ करने के लिए किसी और के कपड़े से अपनी कमीज को रगड़ेंगे, नहीं ! तो फिर अपना मूड खराब होने पर अपना मूड ठीक करने के बजाए, क्यों हम दूसरों का मूड खराब करते है

?

स्विच ट्रिप होना प्राकृतिक है। तनाव की स्थिति में स्विच ट्रिप हो ही जाता है। परन्तु ट्रिप होने के बाद जितनी जल्दी हो सके इसे ऑन करना चाहिए। और यही बुनियादी फर्क है सफल और कम सफल व्यक्तियों के बीच। स्विच तो सफल व्यक्तियों का भी ऑफ होता है परन्तु वह अपना स्विच जल्दी ऑन कर लेते है और साथ ही लोगों का स्विच भी ऑन रखते हैं। जब तक हमारा स्विच ऑन रहता है हमारे जीवन में उत्साह बना रहता है, हमें खुशी महसूस होती है, अच्छे लोग तथा अच्छी दुनिया दिखाई देती है। लेकिन जब स्विच ऑफ हो जाता है तो हमें हर जगह मायूसी, दुःख और गलतियां दिखाई देती हैं। इस प्रक्रिया को कुछ उदाहरणों से समझने का प्रयास करते है–

1. शेर से नहीं तुमसे तेज भागना है

एक बार एक भारतीय और एक विदेशी व्यक्ति जंगल के किनारे सुबह की सैर करने पहुँचे । अचानक भारतीय ने अपने जूते के फीते जल्दी–जल्दी बांधने शुरू कर दिए। विदेशी ने हैरान हो कर उससे पूछा, ''क्या हुआ, अचानक ये फीते जल्दी–जल्दी क्यों बांध रहे हो ?'' उसने बिना कुछ बोले जंगल की ओर इशारा किया। विदेशी ने देखा कि एक शेर जंगल से निकल कर उनकी ओर आ रहा है। विदेशी भी घबराया पर फिर थोड़ी हिम्मत बटोर कर हिन्दुस्तानी से बोला ''तुम्हें क्या लगता है, जूते के फीते बांध कर तुम शेर से तेज भाग लोगे ?'' भारतीय ने बिना रुके भागते हुए कहा ''मुझे शेर से नहीं सिर्फ तुमसे तेज भागना है। बाकी काम शेर खुद कर लेगा।''

सामान्य बुद्धि (Common Sense) का इस्तेमाल करने के लिए किसी डिग्री का होना जरूरी नहीं होता। केवल 'मानसिक स्विच' ऑन होना चाहिए। इसी तरह अपने मानसिक स्विच को ऑन रखते हुए एक मेंढक अपनी विपरीत परिस्थितियों से कैसे बाहर निकल सका, यह आप नीचे दी गयी कहानी से जान पायेंगे।

2. दो मेंढक की कहानी

कुछ समय पहले की बात है। दो मेंढक थे। वे जंगल में तालाब के किनारे एक पेड़ के नीचे रहते थे। एक दिन उन दोनों ने सोचा ''हमने तो बाहर की दुनिया देखी ही नहीं, जंगल के बाहर भी तो कुछ होगा। चलो जरा इन्सानों की दुनिया में घूम कर आते हैं।''

खाने पीने का थोड़ा सा सामान लेकर वे दोनो निकल पड़े। फुदकते–फुदकते वे जंगल की सीमा को पार करके शहर पहुँचे। वहाँ उन्होंने बहुत कुछ देखा – बड़ी–बड़ी ऊँची इमारतें, प्रदूषण फैलाते हुए वाहन, रोटी कमाने की दौड़ में भागते हुए लोग, खेल कूद और पढ़ाई में मस्त नन्हें–नन्हें बच्चे, शोर, शोर

और बहुत सारा शोर।

उन्हें अपने घर की याद आने लगी। घूमते–घूमते वे बहुत थक गए और उनका दिल कर रहा था कि उन्हें पानी मिल जाए और वे एक गीली जगह पर थोड़ा आराम कर लें। ढूंढते–ढूंढते वे एक दूध वाले की दुकान में घुस गए, वहाँ एक बाल्टी रखी थी। उन्हें लगा कि इस बाल्टी में पानी होना चाहिए। फिर क्या था, झट से दोनों ने एक ऊँची छलाँग लगाई और पहुँच गए उस बाल्टी के अन्दर । पर यह क्या ? बाल्टी में तो पानी नहीं था वह तो मलाई से भरी हुई थी। बेचारे दोनों मेंढक उस मलाई में डूबने लगे। उनका दम घुटने लगा। साँस फूलने लगी। आँखें पलट कर बाहर आने लगी।

एक मेंढक ने सोचा ''मेरा तो अन्तिम समय आ गया है, हाय रे मेरी किस्मत ! शहर आकर इन अनजान लोगों के बीच ही मरना था।'' उसने अपने ईश्वर को याद किया और मौत का इन्तजार करने लगा। परन्तु दूसरा मेंढक हार मानने को तैयार नहीं था। वह कोशिश करने लगा कि किसी तरह उस मलाई भरी बाल्टी में से वह बाहर निकल आए। वह अपने पैरों को जोर से चलाने लगा। बहुत कोशिश करने पर भी वह बार–बार फिसल जाता। फिर भी उसने अपना दिल छोटा नहीं किया। हिम्मत का दामन नहीं छोड़ा। वह लगातार कोशिश करता रहा और अपने पैर चलाता रहा।

अरे यह क्या ! अचानक उसने देखा कि वह ऊपर उठने लगा। उसके लगातार जोर से पैर चलाने से मलाई भी लगातार हिल रही थी और वह मक्खन बनने लगी। मेंढक में उम्मीद की लहर दौड़ गई। वह बहुत थक चुका था पर फिर भी पैर चलाता रहा। फिर क्या था ! मक्खन बनता गया और आखिर में उस मक्खन के ढेर पर सवार वह साहसी मेंढक ऊपर उठता गया। जब मक्खन दूध के ऊपर तैरने लगा तब उस साहसी मेंढक ने बाल्टी से बाहर छलांग लगा दी।

अपनी हिम्मत, लगन, मेहनत और जीने की उमंग के कारण वह बच गया परन्तु निराशावादी मेंढक, जिसने परिस्थितियों से घबरा कर अपना मानसिक स्विच आफ कर दिया और उसी मलाई की बाल्टी में डूब कर मर गया।

मुश्किलें सबके रास्ते में आती हैं पर ईश्वर ने हमें उनका मुकाबला करने की शक्ति भी दी है। इसलिए शक्ति से काम लेते हुए साहस बनाए रखना चाहिए। अन्त में जीत उसी की होती है जो कभी हार नहीं मानता। अधिक बुद्धि या बल ही केवल काम नहीं आते। हिम्मत वाले जीवन का संग्राम जीत जाते हैं।

यदि आपको एक संतरा दिया जाए तथा आप उसे जोर लगा कर निचोड़ें तो उसमें से क्या निकलेगा ? आपने सही सोचा – रस। क्या आप जानते हैं संतरे को निचोड़ने से रस क्यों निकला ? संतरे से रस इसलिए निकला क्योंकि उसमें भीतर रस ही भरा था। इसी तरह जब परिस्थितियां अनुकूल न हों,

हालात आरामदेह न हों, उस स्थिति में हम जैसा व्यवहार करते हैं, असल में वही हमारा असली चरित्र है।

क्या विपरीत परिस्थितियों में हम अपना आचरण सही रख पाते हैं ? क्या हम अपना क्रोध काबू कर पाते हैं? यदि हाँ तो इसका अर्थ है हमें अपना मानसिक स्विच ऑन रखने की कला आ गई है। जब सब कुछ ठीक चल रहा हो तो खुश रहना कोई बड़ी बात नहीं परन्तु प्रतिकूल परिस्थितियों में स्विच ऑन रखना ही मजबूत चरित्र की निशानी है।

स्विच ऑन रखने की कला हमें बच्चों से सीखनी चाहिए। आपने देखा होगा छोटे बच्चे एक दिन में न जाने कितनी बार गिरते हैं परन्तु गिरे पड़े नहीं रहते बल्कि जल्दी से खड़े हो जाते हैं। यदि छोटे बच्चे यह काम कर सकते हैं तो हम बड़े क्यों नहीं ?

गिरते तो सभी हैं पर मंजिल पर सिर्फ वही पहुँचते हैं जो फिर उठ जाते हैं। बाकी लोग गिरने के बाद न केवल खुद गिरे रहते हैं बल्कि दूसरों को भी उठने नहीं देते तथा आते जाते लोगों को भी गिराने में लगे रहते हैं। हमें चाहिए कि ऐसे लोगों से सावधान रहें तथा अपना स्विच ऑन रखें।

➡ इस दुनिया में हर कोई खुशी ढूंढ रहा है और उसे पाने का एक ही तरीका है अपनी सोच पर काबू रखना।

➡ असफलता वह अवसर है, जब आप ज्यादा समझदारी से दुबारा शुरूआत कर सकते हैं।

कुलदीप कुमार द्विवेदी
(मानव संसाधन विभाग)

आओ बढ़ाएं एक कदम स्वच्छता की ओर

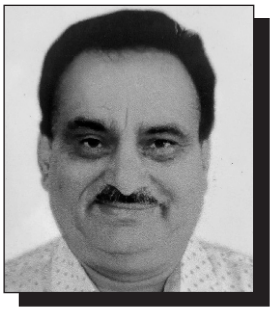

आज के समय में स्वच्छता का जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान है। जैसे कि हर मनुष्य अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक है और यह मानता है कि स्वस्थ शरीर ही असली धन है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मनुष्य अनेक प्रकार के विकल्प अपनाता है जैसे कि रोज सैर करना, व्यायाम करना, योग करना, इत्यादि। उसी तरह जीवन को स्वस्थ रखने के लिए आसपास के वातावरण का स्वच्छ होना बहुत आवश्यक है। अगर आपके आस–पास गन्दगी होगी तो गन्दगी की वजह से बीमारी फैलने का डर रहता है। स्वच्छता को बढ़ावा देने और सभी को जागरूक करने के लिए भारत सरकार ने 2016 में स्वच्छता अभियान की शुरूआत की थी जिस का प्रथम लक्ष्य स्वच्छता के संदेश को गली–गली, मोहल्ले–मोहल्ले तक पहुंचाना है ताकि हर एक नागरिक स्वच्छता के बारे में जागरूक हो।

इसी स्वच्छता के अभियान के प्रति हमारे कार्यस्थल सी–डैक मोहाली में भी निरंतर प्रयास किए जाते हैं जिसके अंतर्गत विभिन्न गतिविधियां निरंतर की जाती हैं जिनमें से कुछ की झलक इस प्रकार हैः

सी–डैक, मोहाली के निदेशक श्री वी. के. शर्मा की उपस्थिति में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा कार्यालय के बाहर एक रैली निकाली गई

"स्वच्छता ही सेवा – 2024" के तहत सी–डैक, मोहाली स्टाफ द्वारा ऐतिहासिक पर्यटक स्थल 'बाबा बंदा सिंह बहादुर वॉर मेमोरिअल फतेहबुर्ज, छपरचिरी' की सफाई की गई।

सी–डैक, मोहाली ने "अपशिष्ट से धन तक" विषय पर स्लोगन/पोस्टर/पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया

अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा सामान्य सफाई के लिए कुछ समय समर्पित किया गया

सी–डैक, मुख्यालय द्वारा "कचरे के पृथक्करण द्वारा ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन" पर आयोजित एक व्याख्यान में सभी कर्मचारियों ने भाग लिया।

दलजीत सिंह जॉली
(प्रशासन विभाग)

रेत से सिलिकॉन – सिलिकॉन से वी एल एस आईः एक अद्भुत परिवर्तन

धरती के अंदर एक रत्न समाया है,
जिसने सिलिकॉन नाम पाया है।
यह रेत के कणों में बसा एक राज है,
इलेक्ट्रॉनिक दुनिया करती जिसपे नाज है।

सिलिकॉन की दुनिया में आते रोज नए आयाम हैं,
जिसमें पाया वी एल एस आई एक नया नाम है।
सूक्ष्म चिप में भरा यह सारा संसार है,
विज्ञान का सम्मान और तकनीक की पहचान है।

बिट और बाइट में चलता यह सारा खेल है,
नैनोमीटर की गहराई में बसा यह सारा मेल है।
गति और क्षमता की बढ़ी दौड़ है,
हर उपकरण में मिलती इसकी छवि और छोर है।

माइक्रो से नैनो तक किया इसने सफर है,
तकनीक का यह अद्भुत असर है।
वी एल एस आई से करे भविष्य के सपने साकार,
हम सब मिल कर करें इसे आभार।

डॉ. कोमल
(शैक्षणिक परामर्श और सेवा विभाग)

क्या होगा सच में उन्मूलन

सी–डैक, मोहाली द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा (2024) में स्वरचित कविता प्रतियोगिता में कर्मचारी वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त कविताः

त्रसित जनता, बढ़ता अपराध
बलात्कार, भष्ट्राचार, जातिवाद
कर रहा है, अपना शिकार।

कभी एक शिकारी आता है, कभी दूसरा शिकारी आता है
चुनाव से पहले करते है,
घातक बीमारियों के उपचार की बात
क्या होगा सच में उन्मूलन ।

सदी–सदियों से शोषण हो रहा,
निसहाय जनता का
किसके आगे करे पुकार
कहीं आरक्षण, कहीं धर्म
कहीं भष्ट्राचार, कहीं बलात्कार ।

ये चंद बिके हुए नंगे धूत
कपटी नेता, कहते हैं
भारत देश महान
और उसी माटी पर पोंछ देते
साम्प्रदायिकता का पोचा।

जनता का जनता से
करवाता है उन्मूलन
और समय के पहिये में फंसा रहता
ये बेबस इंसान मजबूरन
क्या होगा सच में उन्मूलन ।

शिक्षित युवा, है बड़ा परेशान, सोचता है,
तलवे चाटूं, या ईमान बेचूं
या इन्सानियत का गला घोंटू
यही चलता आ रहा है।

ये गंदी नाली के कीड़े .....(बलत्कारियों का जिक्र)
खा रहे देश–दीमक की भांति, नोच रहे भारत माता को
क्या ऐसे होगा उन्मूलन ।

बस बहुत हुआ
सीता बनकर काम नहीं चलेगा.
बनना होगा, भद्रकाली
चंडिका बनकर दुष्टों का
सर्वनाश करना होगा, सर्वनाश करना होगा ।

ओ, इसान जाग तू .....जाग
अपनी सोई आत्मा को जगा
इन भष्ट्राचारियों का, धर्म के ठेकेदारों का
हैवानियत के राक्षसों का उन्मूलन करना होगा

तब ही सच में होगा उन्मूलन
तब ही सच में होगा उन्मूलन ।

सुनील कुमार शर्मा
(सॉफ्टवेयर प्रोद्यौगिकी विभाग)

बस खामोश हूँ

सी–डैक, मोहाली द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा (2024) में स्वरचित कविता प्रतियोगिता में कर्मचारी वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त कविताः

वो कहते है, तुम बोली क्यों नहीं।
उनके लिए मेरा जवाब.....

बस खामोश हूँ, पर यह नहीं कि बोल नहीं सकती,
बस दर्द से दबी आवाज़ में कहीं खोई हूँ।

मैं चीखी थी, चिल्लाई भी थी।
पर उसकी पाँच मिनट की हवस की खुशी ने,
मेरी अवाज दबाई थी।

मैं रौंदी भी गई थी, कुचली भी गई थी,
मेरे जिस्म से उतारे वस्त्रों से,
मेरी चीख दबाई थी।

मैं तो एक फूल थी, जिसने अभी खिलने की आस जगाई थी,
मैं माँ–बाप की नन्ही परी थी, बेटों से भी बढ़ना था जिन्दगी में आगे अभी,
उस शैतान ने मेरी उम्मीद दबाई थी।

बस, अब नहीं रहना है चुप मुझे,
आगे बढ़कर चीखना चिल्लाना है मुझे,
उन सब बलात्कारों को सबक सिखाना है मुझे,
मैं एक खिलौना नहीं, किसी की बेटी, किसी की बहू,
किसी की बहन, किसी की माँ हूँ,
ये याद दिलाना है मुझे।

अब तक खामोश थी, पर यह नहीं कि बोल नहीं सकती।

हिमानी
(मानव कंप्यूटर इंटरफेस विभाग)

नारी : वही माँ, वही शक्ति

सी–डैक, मोहाली द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा (2024) में स्वरचित कविता प्रतियोगिता में विद्यार्थी वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त कविताः

देखो माँ तेरे बालक ने, कैसी यह रीत रचाई,
तुझ पर मर जाने वाले ने,
मंदिर पीर सब बनवाई ।।

पर क्या हुआ उस मनुष्य को,
जो इतना सब तुमको मानता था।
क्यों उसने लड़कियों को तेरी सीख न दिखाई,
देखो माँ तेरे बालक ने, कैसी यह रीत रचाई ।।

यूं तो इस देश में माँ तुझे शक्ति का स्त्रोत माना जाए,
फिर क्यों माँ तेरा ही रूप आज अकेली हो घबराए ।
मनुष्य ने ही अत्याचार कर क्यों उसकी शक्ति गिराई,
देखो माँ तेरे बालक ने, कैसी रीत रचाई ।।

आओ माँ, पुकारें हम, इस देश की नारी पर, अत्याचार हो जाए कम।

हो दुराचार कम, मिले नारी को सम्मान,
अपनी हिम्मत शक्ति से पा जाए वो मुकाम ।।

आओ माँ अपनी कृपा बढ़ाओ ।
हमारे अंदर नई शक्ति जगाओ ।।

उठ खड़े हों हम, अपने सम्मान के लिए लड़ जाएं,
तुम्हारे आशीर्वाद से हम भी नई रीत रचाएं।

खुशी राठौर
(प्रशिक्षु – वर्क बेस्ड लर्निंग)

निन्जा तकनीक

सी–डैक, मोहाली द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा (2024) में स्वरचित कविता प्रतियोगिता में विद्यार्थी वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त कविताः

हाँ–हाँ करते–करते कभी काम न करना
समय पर जाते–जाते देर से पहुंचना
कपड़ों को बारिश में धोना
रात को चार बजे सोना
सुख सुविधाओं को रोना ।
खाली समय सरकार को कोसना
दफ्तर के चक्कर में पिसना
दुख होने पर भी हँसना
सभी को साथ में लेकर चलना
तूफानों से भी न डरना
यही है युवाओं की निन्जा तकनीक का कमाल।

मोहित मिश्रा
(छात्र–एम. टेक)

महाकालेश्वर तथा ओंकारेश्वर तीर्थ मंदिरों के दर्शन

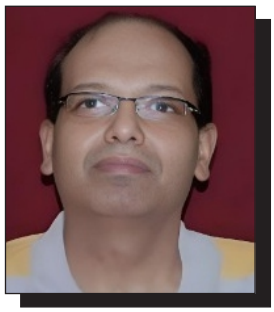

सी–डैक मोहाली द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा (2024) में स्वचरित लेख प्रतियोगिता, "संस्मरण" में कर्मचारी वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त निबंध :

महाकाल (महाकालेश्वर) भगवान शिव जी का मंदिर है । यह मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। माना जाता है कि यहाँ शिव शंकर का दिव्य रूप स्वयं स्थापित है । यह धर्मस्थल हिन्दुओं के लिए एक बड़ी आस्था का प्रतीक है । यह मंदिर मध्य प्रदेश के उज्जैन नगरी में स्थित है । इस मंदिर के दर्शन के लिए हवाई तथा रेल मार्ग का प्रयोग किया जा सकता है। चंडीगढ़ से उज्जैन का सफर लगभग एक से डेढ़ दिन का है । मुझे इस पवित्र मंदिर के दर्शन का मौका मिला ।

मैंने अपनी यात्रा चंडीगढ़ से रेल के माध्यम से की । मैं सुबह चंडीगढ़ से 9:00 बजे चला और रात को 9:00 बजे पहुंचा। उज्जैन रेलवे स्टेशन पहुँच कर मैंने रिक्शा ली और होटल पहुँच गया । मेरा होटल महाकाल मंदिर से लगभग 8 कि. मी. की दूरी पर था । मैं कुछ समय विश्राम करके मंदिर के दर्शन के लिए निकल गया क्योंकि मेरे पास यात्रा के लिए ज्यादा समय नहीं था । इसी कारण मैं रात को ही दर्शन के लिए निकल गया । यह मंदिर सुबह 4:00 बजे खुल जाता है और रात्रि 11:00 बजे दर्शन के लिए बंद हो जाता है। गर्मियों की छुटियाँ होने के कारण यहाँ उज्जैन में बहुत भीड़ थी। महाकाल मंदिर के दर्शन के लिए भी काफी भीड़ थी । महाकाल मंदिर के बारे में इतना कुछ सुन रखा था कि मेरी अभिलाषा दर्शन के लिए बहुत तीव्र थी । मैं जल्दी से भगवान महाकाल के दर्शन करना चाहता था । मंदिर परिसर में पहुँच कर पता चला कि यात्रियों के लिए वी. आई. पी. दर्शन भी उपलब्ध हैं , पर मैं एक साधारण भक्त की तरह भगवान शिव शंकर के दर्शन करना चाहता था इसीलिए मैं भी भक्तों की पंक्ति में लग गया । पंक्ति बहुत लंबी थी पर दर्शन अभिलाषी होने के कारण मुझे पंक्ति छोटी लग रही थी ।

मंदिर के अंदर का वातावरण भक्तिमय था। भक्त भगवान भोले बाबा का नाम लेते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे, यहाँ तक कि बाबा भोले के दर्शन के लिए बड़े उत्साहित दिख रहे थे । मंदिर में चारों ओर भगवान शिव शंकर का गुणगान चल रहा था । रात्रि का समय होने के बावजूद भी हर तरफ उत्साह और भक्तिमय माहौल था । मंदिर के अंदर भी वातावरण बहुत आनंदमय और भक्ति से भरपूर था। भक्तों का उत्साह देखते ही बनता था । हर जगह शिव शंकर, भोले बाबा के जयकारे सुने जा सकते थे जो कि पूरे वातावरण में एक नवीन ऊर्जा उत्पन्न कर रहे थे । सफर की थकान कहाँ चली गई, कुछ पता नहीं था।

मन में भोले बाबा का नाम और आँखों में उनके दिव्य रूप की अभिलाषा मुझे मेरी थकान भूलने में मदद कर रही थी । भगवान शिव की आराधना और दर्शन करने का विचार ही मेरे तन–मन में एक आलोकिक अनुभूति प्रदान कर रहा था ।

मंदिर में चारों ओर भगवान शिव के अलौकिक रूप के दर्शनों की तस्वीरें लगी हुई थी । जब महाकाल के दर्शन हुए तो मेरा मन शांत और स्थिर हो गया । ऐसा लगा कि मैं कोई और ही दुनिया में आ गया हूँ । उस अनुभूति का वर्णन करना बहुत मुश्किल है । महाकाल के दर्शन करने के बाद मैं वहीं कुछ समय के लिए रुक गया । रात्रि के लगभग 10:30 हो गए थे और शिव जी की रात्रि आरती की तैयारियां चल रही थीं । मैं इस रात्रि पूजा का भी आनंद लेना चाहता था । रात्रि की आरती देखने के बाद मैं वापिस अपने होटल (विश्राम गृह) में लौट आया । मेरी सारी थकान भगवान शिव के दर्शन से ही खत्म हो गई थी । भगवान के दर्शन करके मेरा मन अभी भरा नहीं था ।

मैंने अगले दिन सुबह फिर दर्शन करने का विचार बनाया । मैं अगले दिन सुबह फिर प्रातः काल दर्शन करने के लिए 5 बजे उठ गया । सुबह भीड़ कम थी । मुझे जल्दी ही शिव शंकर के दर्शन हो गए । दर्शन करने के बाद मैं मंदिर परिसर घूमा । मंदिर परिसर में ही यात्रियों के रहने और ठहरने के लिए धर्मशाला भी है । यहां यात्रियों के लिए दिन–रात लंगर और खाने– पीने के लिए भी सारे इंतजाम हैं । महाकाल मंदिर में ही छोटे–छोटे कई मंदिर हैं । यहाँ भारत माता का मंदिर भी है जो कि बहुत दर्शनीय है । यह मंदिर अपनी तरह का एक अद्भुत मंदिर है । यह पूरा मंदिर और सारा मंदिर परिसर मध्य प्रदेश सरकार की देख रेख में चलता है इसलिए यहाँ यात्रियों के लिए हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध करवाई गई है । मंदिर अधिकारी और मंदिर ट्रस्ट हमेशा यात्रियों की सहायता के लिए यहां उपलब्ध रहते हैं । वृद्ध यात्रियों के लिए यहाँ ई– रिक्शा भी चलाई जाती है जो कि पूरी तरह से निशुल्क सेवा है ।

महाकाल के दर्शन के बाद मैं सुबह करीब 10 बजे एक और ज्योर्तिपीठ के दर्शन के लिए निकल पड़ा । यह ज्योर्तिपीठ ओंकारेश्वर के नाम से जाना जाता है । यह लगभग 140 कि. मी. की दूरी पर स्थित है । महाकालेश्वर और ओंकारेश्वर की दूरी लगभग 140 कि.मी. की है । यहाँ पहुँचने के लिए बसें और टैक्सी चलती हैं जिसका किराया लगभग 3000–4000 रूपए है । मैंने बस से यहाँ पहुँचने का फैंसला किया। मैं लगभग साढ़े पांच घंटे बाद महाकाल , उज्जैन से यहाँ बस के द्वारा पहुंचा ।

यह ओंकारेश्वर मंदिर नर्मदा और कावेरी नदी के तट पर बना है । यह मंदिर भी हिन्दू धर्म में विशेष महत्व रखता है । कहा जाता है कि यदि यात्री इस मंदिर के दर्शन नहीं करते तो महाकाल मंदिर के दर्शन का फल भी नहीं मिलता । दोनों मंदिरों के दर्शन करने से ही यात्रा सफल मानी जाती है ।

यह मंदिर पहाड़ी पर स्थित है । यहाँ पहुंचने के लिए यात्री या तो नाव का प्रयोग करते हैं या फिर वे यहाँ बने पुल का प्रयोग करते हैं । मैंने यहाँ पहुंचने के लिए नाव का प्रयोग किया । यह अनुभव भी काफी अलग था । नर्मदा और कावेरी का संगम होने के कारण यहाँ पूजा भी की जाती है । यात्री दोनों नदियों के संगम को देखकर आनंद की अनुभूति करते हैं । यहाँ ओंकारेश्वर के दर्शन में मुझे ज्यादा समय नहीं लगा । जल्दी से दर्शन कर मैं वापसी के लिए उज्जैन वापिस आ गया । लौटते–लौटते मुझे काफी रात हो गई थी । यात्रा का यह दिन भी पूरा हो गया । अगले दिन मैंने उज्जैन से फिर रेलगाड़ी पकड़ी और मैं चंडीगढ़ वापिस आ गया ।

यह पूरी यात्रा हमेशा मेरे लिए यादगार रहेगी क्योंकि इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करने की मेरी बहुत अभिलाषा थी । इन तीर्थ स्थलों की यात्रा का अनुभव हमेशा मेरे तन–मन में रहेगा ।

जय शिव शंकर । जय भोले बाबा की ।।

पुनीत अरोड़ा
(डिजिटल स्वास्थ्य नवाचार विभाग)

बचपन का रोमांचक सप्ताह – तेंदुए का आतंक

सी–डैक मोहाली द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा (2024) में स्वचरित लेख प्रतियोगिता, "संस्मरण" में कर्मचारी वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त निबंध :

मेरा बचपन मेरे गांव में बीता। एक बार ऐसी घटना घटी जिसे मैं आज तक नहीं भूल पाया। मेरे गांव के आस–पास का क्षेत्र जंगलों से घिरा हुआ है। गांव के दोनों तरफ लगभग पांच मील पर नदियां बहती हैं और मेरे खेत भी जंगलों से लगे हुए हैं। जंगल में बहुत सारे पेड़–पौधे और पशु–पक्षी भी पाए जाते हैं, जैसे गिद्ध, लोमड़ी, सियार, सुअर, नील गाय, हिरन, आदि। एक बार खतरनाक जानवर, तेंदुआ भी मेरे और आस–पास के गांवों में आया था। उस समय आगे कुआं पीछे खाई जैसी स्थिति हो गई थी।

चैत्र का महीना चल रहा था, फसल की कटाई हो रही थी। उस समय सभी गाँववासी खेतों पर ही रहते थे। मैं अपने दादा जी के साथ रहता था और हमारे पास एक कुत्ता भी था जिसे हम प्यार से शेरू बुलाते थे। एक बार किसी ने कहीं पर तेंदुआ देखा। दादा जी ने मना किया कि बच्चे खेतों पर नहीं जाएंगे। इसी तरह से दो दिन बीते, परंतु तेंदुए का अता–पता नहीं था तो मैंने जिद की कि मैं तो साथ चलूँगा। उस दिन मैं भी खेत पर पहुंचा और दोपहर बीत गई। मैं शेरू के साथ खेल रहा था। बाकी लोग फसल काट रहे थे। तभी अचानक ऐसा हुआ कि मानो मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई क्योंकि ऐसी खबर सुनने के बाद पहले भी लोगों की सांप–छछूंदर जैसी स्थिति हो गई थी। मैंने देखा कि कोई बड़ा भारी जानवर जंगल से निकल कर किसी के खेत में घुस गया। मेरे दादा जी ने जैसे ही देखा, उन्होंने सभी बच्चों को घास के घरों में छिपने को बोला, जो सामयिक बनाए जाते थे। मैं तो छिप गया परंतु तेंदुए का अता–पता न चला। ऐसा लगा कि शायद वह वापस चला गया। किन्तु यह एक तूफान आने से पहले की शांति थी। कुछ लोग तो सिर पर पैर रखकर घर की ओर भागे, कुछ लोग भय के कारण रुके हुए थे। दादा जी ने सुरक्षा के लिहाज से मुझे भी रोक कर घर में ठहरने को बोला।

शाम हो रही थी। पशु–पक्षी अपने निवास स्थान को लौट रहे थे। सूर्य भी ढलता जा रहा था। मैं खाना खाने के बाद शेरू के साथ खेलने लगा, तभी मैंने कुछ चमकीली आँखों वाला जानवर देखा। मेरे दादा जी ने तुरंत मुझे घर के अंदर भेज दिया। शेरू ने आसमान सिर पर उठा लिया और तेजी से भौंकने लगा। दादा जी कुल्हाड़ी लेकर तेंदुए का सामना करने लगे। शुरू में उसने दादा जी पर हमला किया,

मेरी तो उस समय सांसें रुक गई थीं और एक सिरहन सी दौड़ रही थी पूरे शरीर में कि अब मौत निकट आ गई है, परंतु दादा जी और शेरू के साहस, निडरता और धैर्य से तेंदुआ खुद–ब–खुद डरने लगा। मैंने मकान की रंध्रों से देखा, तेंदुआ जैसा खूंखार जानवर धीरे–धीरे पीछे हट रहा है। यह समय बहुत ही भयानक था। दादा जी बताया करते थे कि तेंदुआ लंबी छलांग लगा लेता है और पेड़ों पर चढ़ जाता है और मोटी–मोटी सलाखें तोड़ देता है, परंतु उस दिन तेंदुए की हालत खराब हो रही थी। कुछ समय बाद मैंने देखा कि तेंदुआ दुम दबा कर भाग गया, यह देख कर मेरी जान में जान आई और मैंने दादा जी की आँखों में निडरता और साहस देखा। शेरू ने भी निर्भीक होकर उस हिंसक जानवर का डट कर सामना किया था। हम लोग बहुत खुश थे, परंतु अभी मौत का डर खत्म नहीं हुआ था, क्योंकि वह कभी भी वापिस आ सकता था।

दादा जी ने उसे दूर भगाने की योजना बनाने की सोची और कुछ लोगो को इकट्ठा किया तथा शेरू और दूसरे कुत्तों को लेकर चल दिए तेंदुए को ढूढ़ने। इस तरह आधी रात तक वे उसे ढूढ़ते रहे। अंततः वह दिख गया। उसकी आंखे चमचमा रही थी, किन्तु वह अभी भी डरा हुआ था, इसलिए जैसे ही उसने कुत्तों के भोंकने की आवाज सुनी, वह वहाँ से बहुत दूर चला गया, शायद नदी पार कर गया हो। उस रात हम लोग सोए नहीं क्योंकि आदमखोर वापिस आ सकता था। एक सप्ताह तक पूरे क्षेत्र में डर का माहौल बना रहा। सभी लोग दादा जी की रणनीति और शेरू की शौर्यगाथा का गुणगान कर रहे थे। शेरू तो हमारा नायक बन गया। यह मेरी जिंदगी का सबसे यादगार दिन था। एक सप्ताह होने के बाद भी तेंदुआ वापिस नहीं आया, किन्तु दादा जी ने सोचा क्यों न इसको उसके निवास स्थान पर पहुंचाया जाए क्योंकि वह भी तो प्रकृति का अभिन्न अंग है। प्राकतिक संतुलन बनाये रखने के लिए उन्हें भी यहाँ रहने का अधिकार है।

दादा जी ने अधिकारिओं से बात की कि तेंदुआ एक सप्ताह से हमारे क्षेत्र में लोगों को डरा रहा है और कुछ जानवरों को भी खा गया था। एक दिन वन विभाग के विशेषज्ञ पिंजड़ा लेकर आए और पिंजड़े के साथ बकरी बाँधी गयी, जहा तेंदुआ देखा गया था। जैसे ही वह बकरी को खाने के लिए दौड़ा, पिंजड़े में फंस गया और वन विभाग वाले उसे ले गए और अंततः लोगों की जान में जान आयी। लोग बहुत खुश थे क्योंकि सबको विश्वास हो गया था कि वह चला गया है और अब नहीं आएगा।

यह घटना मेरे जीवन की सबसे डरावनी, प्रेरणादायक और यादगार घटना थी। पहले मैंने डर, फिर साहस, निडरता और धैर्य महसूस किया। साहसी लोगों से प्रेरणा ली कि कैसी भी कठिन

परिस्थिति क्यों न आए, हमें उसका डटकर सामना करना चाहिए। एक न एक दिन जरूर जीतेंगे और अंत में यह भी सीखा कि संगठन में रहें और दूसरे जीव भी इस पारितंत्र का हिस्सा हैं , उन्हें भी उतना ही अधिकार है जितना हमें है, इसलिए उन्हें बिना नुकसान पहुचाए रहने दिया जाए जिससे प्रकति का संतुलन बना रहे।

रामस्वरूप
(साइबर सुरक्षा प्रौद्योगिकी विभाग)

कविता लिखूं

मैं कविता लिखूं?
मैं क्या कविता लिखूं?
ये कि मुझे कविता लिखना नहीं आता, या पढ़ना?

कवि बनूं? या कविता लिखूं?
कविता में सार होता है अगर हो तो वो कहां से लाऊं?
दिन भर का थका हारा इंसान सार बनाए, या दाल रोटी खाए?

इस असमंजस में कविता लिखूं। पढ़ेगा कौन? लिखने वाला!
या दर्शक दीर्घा में जबरदस्ती बिठाया हुआ थका हारा इंसान?

कलम उठाता हूँ तो स्याही उतरने को तैयार नहीं होती।
कागज अक्षर उकेरने के लिए तैयार नहीं। किससे साथ मांगू ?
प्रकृति, पहाड़, झरने, बादल, आकाश, पाताल, पेड़–पौधे, जानवर,
हवा, आग, मिट्टी इनसे भी क्या मांगू, कि मैं कविता लिखना चाहता हूं!

या ये कहूं कि जिंदगी ही एक कविता है, जिसमें अपनों का साथ, गांव,
खेत, स्वास्थ्य, संघर्ष, अच्छाई, कर्म, धर्म, काम और मोक्ष है। और यही कविता है।

या मैं कविता लिखूं!
अब भी समझ नहीं आ रहा क्या कविता लिखूं?

यशार्थ सिंह
(साइबर सुरक्षा प्रोद्यौगिकी विभाग)

हमारी प्यारी हिंदी

ये जो है हमारी प्यारी हिंदी
इस पर बहुत भाती है बिंदी ।
जब मुख से निकलती है यह,
मानो फूल सी बरसती है हिंदी ।
एक सरगम है संगीत है हिंदी,
हमारी आन व शान है हिंदी ।
एक भाषा ही नहीं है यह दोस्तों,
अपनेपन का एहसास है हिंदी ।
जिसने पूरे देश को जोड़ रखा है,
हमारे अभिमान का स्रोत है हिंदी ।
युवाओं से करते हैं हम विनती,
आधुनिक युग में भी संभाल रखना हिंदी ।
करेंगे जब इसका उपयोग भरपूर,
जीवनधारा सी चलती रहेगी हिंदी ।
राजभाषा का अपनी सत्कार करें,
क्यों जो ज्ञान का सागर है हिंदी ।
राजभाषा का अपनी सत्कार करें,
क्यों जो ज्ञान का सागर है हिंदी ।

हरप्रीत कौर
(निदेशक कार्यालय)

मर्यादा

वचन में रहना मर्यादा है, मिल के रहना मर्यादा है।
समर्पित रहना मर्यादा है, विनम्र रहना मर्यादा है।

मर्यादा में नदी जो बहती, सबकी प्यास बुझाती है।
प्रकृति रह के मर्यादा में, सबको सुख पहुँचाती है।

मर्यादा में रहता है जो, सत्कार सबका करता है।
खुद भी खुशी में रहता है, औरों को भी खुश करता है।

मर्यादा परिवार में हो तो, हंसी–खुशी सब रहते हैं।
फर्जों को निभाते हैं, औरों को आदर देते हैं।

मर्यादा में रहे जो इन्सां, भगवान को वो भाता है।
हर पल वो रहे आनंद में, प्रभु से प्रेम निभाता है।

भगवान श्री राम चंद्र ने मर्यादा की रीत चलाई थी।
मान आज्ञा अपने पिता की, मर्यादा खूब निभाई थी।

आओ हम सब मिल के, उनके पद– चिन्हों पर चलते जाएं
अपनाकर के मर्यादा को जीवन को महकाते जाएं।

आशा रानी
(शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग)

मेरे विचार – राजभाषा के रूप में हिन्दी

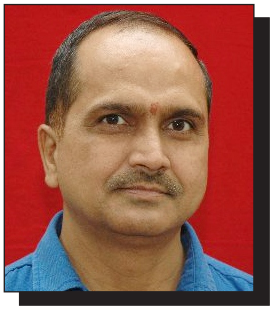

संविधान सभा ने लम्बी चर्चा के बाद 14 सितम्बर 1949 में हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिये प्रतिवर्ष 14 सितम्बर का दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

यद्यपि भारत शुरू से ही एक बहुभाषायी देश था और बहुत लम्बे काल से हिन्दी का उपयोग इसके बहुत बड़े भाग पर सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होता था। भक्तिकाल में उत्तर से दक्षिण तक, पूरब से पश्चिम तक अनेक सन्तों ने हिन्दी में अपनी रचनाएँ रचित की थी। स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता ने महान भूमिका अदा की थी इसलिए अनेक लोगों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने का एक सपना देखा था।

वैसे तो किसी भी स्वाधीन देश के लिए जो महत्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का होता है, वही महत्व उसकी राजभाषा का होता है। किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता और राष्ट्र की पहचान बनाए रखने के लिए उस राष्ट्र की अपनी एक राजभाषा होना अनिवार्य है। यद्यपि हिंदी भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है, यह राष्ट्र की वाणी है, राष्ट्र की पहचान है और समस्त राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने वाली भाषा है।

आज हिंदी संपर्क भाषा, राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रुप में भारत की एक अहम पहचान बन चुकी है। आज के समय में हिंदी पूरे देश में बोली और समझी जाती है। विशेष कर हिंदी भाषी राज्यों में तो हिन्दी आम बोलचाल, राजनीति, पत्रकारिता, सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों में अपने विचार व्यक्त करने का एक प्रमुख साधन है।

आज भारतीय दूरदर्शन के चैनलों ने भी हिंदी के कार्यक्रमों के प्रसारण द्वारा हिंदी को विश्व भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी की व्यापकता के कारण आज दुनिया में लगभग 175 देशों में हिंदी के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के अनेक केंद्र चल रहे हैं।

इसी दिशा में गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन राजभाषा विभाग ने एक क्रान्तिकारी पहल करते हुए हिंदी को और अधिक लोकप्रिय तथा सर्वव्यापी बनाने के लिए "कंठस्थ" नामक ऐप विकसित किया है जो गूगल की तरह ही अंग्रेजी से हिंदी और आवश्यकता पड़ने पर हिंदी से अंग्रेजी में तुरन्त अनुवाद कर देने की एक तकनीक है। इस एप को सी–डैक द्वारा ही विकसित किया गया है। कंठस्थ,

ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) मशीन–साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा (Source language) के वाक्यों एवं लक्षित भाषा (Target language) में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक साथ रखा जाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः प्रयोग कर सकता है।

"कंठस्थ" की टैग लाइन ही है 'अनुवाद सारथी'।

राज कुमार
(प्रशासन विभाग)

हिंदी – मातृभाषा

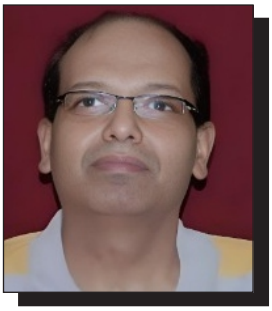

हिंदी है हमारी मातृ भाषा, आओ इसे अपनाएँ
अंग्रेजी छोड़, करें हर कार्य हिंदी में, यही सभी को बताएँ।

हिंदी है सरल, सहज और सुगम
करें इसका प्रयोग, यही सभी को समझाएं
हिंदी है हमारी मातृभाषा, आओ इसे अपनाएँ।

हिंदुस्तानी हैं हम, हिंदी है हमारी मातृभाषा
यह संदेश जग–जग तक ले जाएँ,
बच्चे–बूढे सभी करें हिंदी का प्रयोग,
हिंदी पखवाडा मनाएँ,
हिंदी है हमारी मातृभाषा, आओ इसे अपनाएँ।

हिंदी नहीं तो हम नहीं, यह हमारी पहचान है।
करो गर्व हिंदी भाषा पर, यह हम भारत वासियों की शान है।

आओ सब मिलजुल कर इसका प्रचार बढाएँ।
क्योंकि हिंदी है हमारी मातृभाषा, आओ इसे अपनाएँ ।

पुनीत अरोडा
(डिजिटल स्वास्थ्य नवाचार विभाग)

राजभाषा गतिविधियां

हिंदी पखवाड़े के दौरान सी-डैक, मोहाली के
पुस्तकालय में हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं

हिंदी पखवाड़ा (14-28 सितम्बर 2024)

सी-डैक
CDAC

नराकास, मोहाली के तत्वाधान में सभी नराकास कार्यालय सदस्यों
के लिए सी-डैक, मोहाली में 17 दिसंबर 2024 को पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

माँ

माँ, मैंने दुनिया देखी,
पर तेरे जैसा न देखा कोई।

तेरी तुलना किसी से करनी जो चाही
तो तुलनीय न मिला कोई।

फिर एक दिन अहसास हुआ
माँ से बडा न कोई।

जिसने अपने खून से मुझको सींचा
जिसने नन्हे पौधे से मुझे वृक्ष बनाया।

उस माँ की मैं तुलना करू
इतनी तो मैं हकदार नहीं।

जो मेरे हर गम में शामिल
जो मेरे लिए हर वक्त प्रार्थना करती

वो ईश्वर तो नहीं है
पर ईश्वर से कम भी नहीं।

सोनिया
(शैक्षणिक परामर्श और सेवा विभाग)

स्वच्छ भारत अभियान

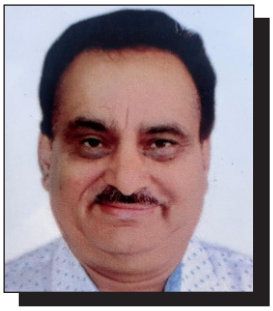

हर गली शहर में चर्चा है
हर गली शहर में चर्चा है
स्वच्छ भारत अभियान की
जरा सोचो, दिल से सोचो, क्या योगदान दिया हमने इस अभियान में ?

अगर दिया है, तो मुबारक,
अगर नहीं दिया तो, आओ प्रतिज्ञा करें, आज से, अभी से
मैं भी करूंगा योगदान, स्वच्छ भारत अभियान में
हर गली, मोहल्ले में चर्चा है, स्वच्छ भारत अभियान की।

मैं गया कई बार, बाहर दूसरे देशों में
कनाडा में और ऑस्ट्रेलिया में
क्या देखा मैंने, नहीं फेंकते वह कूड़ा करकट, न कोई गंदगी,
हर मानव खुद जागरूक है, ऐसी ही है वहां की सिखलाई और डर भी है,
कहीं मिल ना जाए कोई टिकट चालान की

हम भी जरा कोशिश करें, वैसे ही सफाई की
क्योंकि बिन सफाई, बीमारी फैले, जो दुश्मन है जान की।
हर गली शहर में चर्चा है स्वच्छ भारत अभियान की।

जब हम सारे सच्चे मन से और ईमानदारी से स्वच्छता को दिल में बसाएंगे,
पॉलिथीन की थैली की जगह कपड़े की थैली का विकल्प अपनाएंगे,
जो लहर चल रही है स्वच्छता की और मोदी जी के अभियान की
अब हमारे सब के कंधों पर है सफलता इस अभियान की
हर गली मोहल्ले चर्चा है स्वच्छ भारत अभियान की।

दलजीत सिंह जॉली
(प्रशासन विभाग)

गाँव

पाँव दुःखी नहीं होते,
मीलों का रास्ता सोच
पेट बर्दाश्त कर लेता है भूख,
जीत ली जाती है बार–बार प्यास
और पसीने की लड़ाई।
रोती बच्ची के मां–बाप हार नहीं मानते,
बस दुःखी होता है,
उसका मन शहरों के दुत्कारे जाने पर ।।

एक गाँव ही होता जो,
पलकें बिछा बिछा कर करता स्वागत,
बैठता हैं पेड़ों की पलंग पर और झूलता झूला।
पानी होता है दरिया प्यास बुझाने को,
मिट्टी होती तन की ठंडक ।
भूख लगे तो घर देते हैं,
खाना बिन पैसा,
खाट देते हैं सोने को
रातों को लगती हैं तारों की बारात,
पेड़–पौधे बांटते है कहानियां,
एक गाँव ही होता,
जो पलकें बिछाकर करता स्वागत ।।

यशार्थ सिंह
(साइबर सुरक्षा विभाग)

जमाने लगे है बेटियों को

चाय के कप उठाने से लेकर
विश्वकप को उठाने तक, जमाने लगे है बेटियों को।
आसान बिल्कुल नहीं था ये सफर
उन चार लोगों को जवाब देने में जमाने लगे है बेटियों को।
जो कहते थे, लड़कियां तो बेचारी, कमजोर होती है
उन लोगों को झूठ साबित करने में, जमाने लगे है बेटियों को।
जिन घरों में बेटियों को कभी उनके हिस्से का सम्मान नहीं मिला
उन्हीं घरों में आज अपने हिस्से का सम्मान पाने में जमाने लगे है बेटियों को।
जहां कभी बेटियों को घर का बोझ समझा जाता था
वहीं अपना हक पाने में, जमाने लगे है बेटियों को।
जहां कभी अकेले घर से बाहर निकलने की अनुमति नहीं होती थी
वहीं आज अंतरिक्ष तक जाने में, जमाने लगे है बेटियों को।
जहां कभी बेटियों को पढ़ने की अनुमति नहीं होती थी
वहीं आज इंजीनियर,डॉ,डीसी,डीजी, राष्ट्रपति बनने तक, जमाने लगे है बेटियों को।
ऑपरेशन सिंदूर में, दुश्मन को धूल चटाने वाली
व्योमिका और सोफिया कुरैशी बनने तक, जमाने लगे है बेटियों को।
बेटियां कही भी, किसी तरह से बेटों से कम नहीं
ये साबित करने में, जमाने लगे है बेटियों को।

सोनिया
(शैक्षणिक परामर्श और सेवा विभाग)

पहली उड़ान

सी–डैक मोहाली द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा (2024) में स्वरचित लेख प्रतियोगिता ''संस्मरण'' में विद्यार्थी वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त लेख

यह यात्रा उस नन्हीं–सी लड़की की यात्रा है जो अपने घर से पहली बार अकेले पढ़ने निकल रही थी। उस दिन उस की आँखों में अलग सी चमक थी। वह नहीं जानती थी कि उसका यह चयन सही है या नहीं। वह तो केवल अपने मां –बाबा के सपने पूरे करने के लिए पढ़ना चाहती थी। लेकिन उसे यह कहां पता था कि सपने पूरे करने के लिए उसे अपना ही घर छोड़ कर दूर पढ़ने जाना पड़ेगा । वह डरते डरते घर से बाहर निकली । जिन रास्तों पर वह अक्सर जाया करती थी, वे रास्ते उसे आज बहुत अजीब से लगे। एक अजीब–सा डर था उसके अंदर। फिर उसे अपनी मां की आवाज सुनाई दी ''हिम्मत कर बेटी , तू कर सकती है।"

इतना–सा सुनते ही मानो उसे हिम्मत मिल गई। वह अकेले पूरा सफर तय करके अपने कॉलेज पहुंची। वहां कदम रखते ही मानो उसका डर खत्म सा हो गया। उसे वहां अपने जैसे हजारों बच्चे दिखे जो अपना डर खत्म करके, अपना–अपना घर छोड़ कर मेहनत करने आए थे, कुछ बनने आए थे। वह लड़की वहां सबसे मिली। रात को वह जब अपने कमरे में लौटी, तो उसने सुकून की साँस ली। उसने थोड़ा आराम करने की सोची।

जैसे ही वह लेटी उसे सारी बातें याद आईं कि कैसे वह पूरा सफर तय करके अपनों से दूर एक नए शहर में अपने सपनों को पूरा करने के लिए आई है। जब वह घर से निकल रही थी तो उसे डर था कि अकेले सब कुछ कैसे करेगी । यहाँ तो उसका ध्यान रखने के लिए, उसकी बातें सुनने के लिए उसके मां–बाबा भी नहीं होंगे। जो कभी अपने घर से अकेले कहीं दूर नहीं गई, वह उस दिन पहली बार निकली, अपनी पहली उड़ान ली। कठिन तो है उसके लिए सब अकेले करना पर वह खुद से संभल रही है।

आज कल तो सब डिजिटल हो गया है। वह अपने घर वीडियो कॉल करती है तो उसे शांति तो मिलती है पर उसका बहुत मन करता है कि अपने मां–बाबा से मिले। वह खाना तो यहां भी खाती है पर वह मां के हाथ वाला स्वाद अब नहीं है। वह यहां रात को सोती तो है पर मां की गोद में सर रख कर जो सुकून की नींद है , वह अब नहीं आती। वह अपना ध्यान रखती तो है पर जैसे उसके बाबा उसका ध्यान रखते थे उसमें कुछ और ही बात थी। वह सबको याद करके रोती तो है पर अब उसे चुप करवाने वाला कोई नहीं है। वह अपने घर वालों को याद करके रोने के बाद खुद ही चुप होना सीख गई है। वह अपने बीमार होने पर खुद ही दवाई खाना और ठन्डे पानी की पट्टी रखना सीख गई है। हाँ , मां –बाबा, आपकी

बेटी अब बड़ी हो गई है। वह सारी तकलीफों का सामना खुद करना सीख गई है। वह अपनी उड़ान खुद भरना सीख गई है।

वह लड़की कोई और नहीं बल्कि मैं ही हूँ। यह मेरी ही यात्रा है और मैं ही अपनी कहानी की लेखिका हूँ। जब अपनी कहानी मुझे खुद ही लिखनी है तो क्यों न उसे कामयाब बनाएं। क्यों अपनी कहानी को छोड़ें किसी और के भरोसे , जब अपनी कहानी की लेखिका मैं ही हूँ ।

यशस्वी शर्मा
(छात्रा – एम् टेक)

मेरी यात्रा

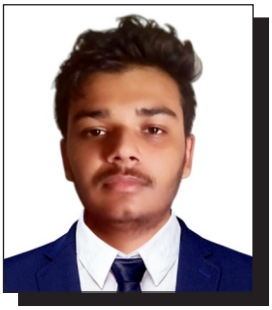

सी–डैक मोहाली द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा (2024) में स्वरचित लेख प्रतियोगिता ''संस्मरण'' में विद्यार्थी वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त लेख

यह कहानी शुरू होती है मेरे स्नातक के तीसरे साल से। मैं अपने स्नातक के तृतीय वर्ष में था। हमारे विश्वविद्यालय के अध्यापकों ने एक यात्रा का प्रबंध करवाया। यह मेरी पहली यात्रा थी जिसमें मैं अपने परिवार वालों के साथ न जाकर अपने दोस्तों के साथ जा रहा था। यह एक बहुत ही अलग अनुभव होने वाला था।

एक सप्ताह के पश्चात यह यात्रा आरम्भ हुई। मैं और मेरे सभी मित्र विश्वविद्यालय पहुंचे। बस 10.00 बजे निकलने वाली थी लेकिन किसी कारण से यह समय बदल कर 1.00 बजे हो गया।
बहुत रात हो चुकी थी। जैसे–तैसे करके बस में बैठे और यात्रा आरम्भ हुई। बस में अलग–सा ही माहौल था। यह सब मेरे साथ पहली बार था। सभी सीनियर्स बस में शराब का सेवन कर रहे थे। गाने बज रहे थे। कुछ लोग नाच रहे थे। मैं बैठ कर उन्हें देख रहा था।

सुवह के पांच बजे का समय था। बाहर से एक बहुत तेज आवाज आई। पता चला कि बस का टायर फट गया है। हम सब बस से बाहर निकले ।

दिसंबर का महीना था। सभी सर्दी से ठिठुर रहे थे। यहां हमने आपसी तालमेल बिठाया और किसी न किसी तरह हमने आग जला ली।

सुबह का समय था। कोई दुकान भी नहीं खुली थी। टायर सही करने में 3–4 घंटे का समय लग चुका था। अब बस एक ही आस बची कि बस किसी न किसी तरह पहुँच जाएं। 12:00 बजे हम ऋषिकेष पहुंचे। हमारे ठहरने का इंतजाम टैंटों में था। पहली बार देखने में तो अच्छा लग रहा था लेकिन जैसे–जैसे रात होती जा रही थी, ठंड बढ़ रही थी और जो मेरे सीनियर्स थे उनका तो अलग ही चल रहा था।

यह मेरी पहली कॉलेज यात्रा थी तो मुझे सब नया अनुभव हो रहा था। मैंने इस यात्रा में हर तरह का अनुभव किया। पहले दिन हमने आराम किया, दूसरे दिन हम ट्रैकिंग के लिए गए थे। यह पहली बार था कि मैं इतना पैदल चला था। सभी थक चुके थे। कुछ लोगों ने वापिस टेंट तक आने के लिए गाड़ी बुक की थी। लेकिन मैं और मेरा दोस्त अलग ही धुन में थे। हम पैदल ही निकल गए।

रास्ते में काफी दुविधाएं आईं। एक बार बंदर हमारे पीछे पड़ गए तो उनसे बचते बचाते हम आगे आए। फिर एक कुत्ता पीछे लग गया ।
लेकिन इन सारी कठिनाइयों को पार करते हुए हम अपने कैंप में पहुंचें। इस ट्रैक के बाद हमारी हालत

खराब हो चुकी थी। हम अपने टेंट में जाते ही सो गए। पता चला बाहर से बहुत तेज चिल्लाने की आवाज आ रही थी। मैंने देखा कि सभी सीनियर्स शराब के नशे में थे। मैंने इस यात्रा के दौरान शायद सारे नशे देख लिए थे। हालाँकि मैं खुद कुछ नशा नहीं करता था लेकिन दूसरों को नशा करते देख मजा भी बहुत आता है।

अब तीसरे दिन पर आते हैं। तीसरे दिन हम सब राफ्टिंग करने के लिए गए। राफ्टिंग पर बैठे तो पहले बहुत डर लग रहा था लेकिन धीरे धीरे आनंद आने लगा। तकरीबन दो घंटे तक हमने राफ्टिंग की और ऋषिकेष के लोकल बाजार में घुमने गए। वहां से कुछ सामान लिया और आखिर में बस में आकर बैठ गए।

यह यात्रा मेरी जिंदगी की पहली यात्रा थी जिसमें मैं अपने दोस्तों के साथ गया था। बहुत अच्छे अनुभव भी हुए और बहुत अजीब अनुभव भी हुए पर आखिर में आनंद आया।

मानव सिंह
छात्र – एम् टेक

कृत्रिम बुद्धिमत्ता
(Artificial Intelligence)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आज के तकनीकी युग की एक क्रांतिकारी खोज है, जो मनुष्यों के बौद्धिक कार्यों को मशीनों के माध्यम से करने की क्षमता प्रदान करती है। इसका उद्देश्य ऐसी मशीनें और सॉफ्टवेयर बनाना है जो सोच सकें, समझ सकें, सीख सकें और निर्णय ले सकें – बिलकुल इंसानों की तरह। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को कंप्यूटर साइंस की एक शाखा माना जाता है, जिसका प्रयोग करके मशीनें जटिल समस्याओं को हल करने, डाटा का विश्लेषण करने और अनुभव से सीखने में सक्षम होती हैं। यह तकनीक दिन–प्रतिदिन तेजी से विकसित हो रही है और आज लगभग हर क्षेत्र में इसकी उपस्थिति महसूस की जा रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रमुख घटक

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) मुख्यतः निम्नलिखित प्रमुख घटकों पर आधारित होता हैः

1. मशीन लर्निंग (Machine Learning) – यह प्रणाली मशीनों को अनुभव के आधार पर बिना किसी विशेष कोडिंग के खुद से सीखने की क्षमता देती है ।
2. डीप लर्निंग (Deep Learning) – यह मशीन लर्निंग का ही एक रूप है जिसमें न्यूरल नेटवर्क का उपयोग करके जटिल समस्याओं का समाधान किया जाता है।
3. नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) – यह तकनीक मशीनों को मानव भाषाओं को समझने और उस पर कार्य करने की क्षमता प्रदान करती है।
4. कंप्यूटर विजन (Computer Vision) – इसके माध्यम से मशीनें छवियों और वीडियो से जानकारी प्राप्त कर सकती हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के उपयोग के क्षेत्र

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में हो रहा हैः

स्वास्थ्य सेवा (Healthcare) – बीमारी की पहचान, डायग्नोसिस, दवाओं की खोज, और रोबोटिक सर्जरी में AI का व्यापक प्रयोग हो रहा है।

शिक्षा (Education) – पर्सनलाइज्ड लर्निंग, वर्चुअल टीचर्स, और ऑटोमेटेड असेसमेंट के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) टूल्स का प्रयोग किया जा रहा है।

कृषि (Agriculture) – फसल की स्थिति की निगरानी, मिट्टी का विश्लेषण, और कीट नियंत्रण में

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) सहायक सिद्ध हो रहा है।

परिवहन (Transportation) – सेल्फ ड्राइविंग कार, ट्रैफिक मैनेजमेंट और स्मार्ट नेविगेशन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की भूमिका महत्वपूर्ण है।

व्यापार और वित्त (Business & Finance) – ग्राहक सेवा, धोखाधड़ी की पहचान, क्रेडिट स्कोरिंग और ऑटोमेटेड ट्रेडिंग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का प्रयोग हो रहा है।

सुरक्षा और रक्षा (Security & Defense)– निगरानी प्रणाली, चेहरा पहचानने वाले कैमरे, और साइबर सुरक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) उपयोगी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के लाभ–

गति और दक्षता में वृद्धि– कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) मशीनें बड़ी मात्रा में डाटा को तेजी से प्रोसेस कर सकती हैं।

त्रुटियों में कमी – इंसानी गलतियों की तुलना में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित सिस्टम अधिक सटीक होते हैं।

24•7 कार्यक्षमता – कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) सिस्टम बिना रुके लगातार काम कर सकते हैं।

कठिन कार्यों को सरल बनाना, खतरनाक या कठिन कार्यों जैसे माइनिंग, स्पेस एक्सप्लोरेशन आदि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) सहायता करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के नुकसान–

1. **रोजगार में कमी (बेरोजगारी की समस्या)**–

   कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित मशीनें और रोबोट कई इंसानी नौकरियों को खत्म कर रहे हैं, खासकर डेटा एंट्री, ग्राहक सेवा, निर्माण क्षेत्र आदि में।

2. **निजता का उल्लंघन (Privacy Violation)**–

   कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) सिस्टम व्यक्तिगत डेटा को एकत्र करके उसका विश्लेषण करते हैं, जिससे व्यक्ति की गोपनीयता खतरे में पड़ सकती है।

3. **मानवीय हस्तक्षेप में कमी (Lack of Human Touch)**–

   शिक्षा, चिकित्सा और सेवा क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के बढ़ते उपयोग से मानवीय संवेदनाओं और व्यवहारिक समझ की कमी हो जाती है।

4. **अत्यधिक निर्भरता (Over dependence on Machines)**–

   कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) पर अधिक निर्भरता से इंसानों की सोचने और निर्णय लेने की क्षमता में कमी

आ सकती है।

5. **नैतिक समस्याएँ (Ethical Issues)**–
   कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के प्रयोग से जुड़े अनेक नैतिक प्रश्न उठते हैं, जैसे किसे जिम्मेदार ठहराया जाए, यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) कोई गलती करता है।
6. **मूल्य प्रणाली में बदलाव (Shift in Value Systems)**–
   मनुष्य–केंद्रित मूल्यों जैसे करुणा, सहानुभूति, और नैतिकता को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) प्रतिस्थापित नहीं कर सकता।
7. **डिजिटल असमानता (Digital Divide)**–
   जो लोग तकनीकी रूप से सशक्त नहीं हैं, वे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तकनीक से वंचित रह सकते हैं और पीछे छूट सकते हैं।
8. **रचनात्मकता में कमी (Reduction in Creativity)**–
   कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) द्वारा स्वचालित कार्यों के कारण मनुष्य की कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता में कमी आ सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सीमाएं और चुनौतियाँ

रोजगार पर प्रभाव– कई परंपरागत नौकरियाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के कारण खत्म हो सकती हैं।
नैतिक और कानूनी सवाल– यदि कोई कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) सिस्टम गलत निर्णय लेता है तो उसकी जिम्मेदारी किसकी होगी?
गोपनीयता का उल्लंघन– कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) डाटा पर आधारित है, जिससे निजी जानकारी के लीक होने की संभावना बढ़ जाती है।

भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की भूमिका

आने वाले वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जीवन का एक आवश्यक हिस्सा बन जाएगी। स्वास्थ्य से लेकर शिक्षा, और उद्योग से लेकर रक्षा तक, हर क्षेत्र में इसका प्रभाव और भी गहरा होगा। स्मार्ट सिटी, स्मार्ट हेल्थकेयर और स्मार्ट एजुकेशन जैसी परियोजनाएँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के बिना संभव नहीं होंगी।

हालांकि, इसके साथ यह भी जरूरी है कि हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के विकास को नैतिक मानकों के अनुसार नियंत्रित करें, ताकि इसका दुरुपयोग न हो और यह मानवता के हित में कार्य करे।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधुनिक युग की वह शक्ति है जो न केवल तकनीकी प्रगति को गति दे रही है, बल्कि मानव जीवन को सरल, सुरक्षित और कुशल भी बना रही है। यदि इसे सही दिशा में उपयोग किया जाए, तो यह समाज और मानवता के लिए एक वरदान साबित हो सकती है।

संजय खंडेलवाल
(साइबर सिक्युरिटी विभाग)

मेरा लाल भी रण में उतरेगा

सिन्दूर को सम्मान दिलाने मेरा लाल भी रण में उतरेगा।
अत्याचारियों को सबक सिखा कर ही, अब वह अपने वतन लौटेगा।
इसके पापा–मम्मी ने मातृभूमि के प्रति अपना फर्ज निभाया था
बांग्लादेश और कारगिल में तिरंगा फहरा कर
देश का मान बढ़ाया था।
रखी दोनों ने दूध की लाज
मेरा कोख जना क्या अब पीछे रह पाएगा ?
महिला वीरांगनाओं–कर्नल सोफिया कुरैशी,
विंग कमांडर व्योमिका सिंह लक्ष्य भेदने की सूचना देकर
सद्भावना का पाठ पढ़ाया है।
मिनटों में भेद डाले कायरों के नौ प्रशिक्षण स्थल
नारी शक्ति ने सशक्त होकर दिखलाया है।
भारत माता की सिन्दूर की लाज बचाने मेरा लाल भी आगे बढ़ जाएगा।
विदेश सचिव विक्रम मिश्री ने राष्ट्र से साँझा की सही और सटीक जानकारी
क्या फिर भी कोई व्यर्थ में उछल–कूद कर पाएगा
सिन्दूर को सम्मान दिलाने मेरा लाल भी रण में उतरेगा।।

रमेश चंद तंवर
(मूल्यांकन विभाग)

सीडैक
CDAC

प्रिय पाठकगण,

अपनी प्रतिक्रियाएं तथा हिंदी पत्रिका 'सूत्रपात' को बेहतर बनाने के लिए कृपया अपने बहुमूल्य सुझाव हमें hindimohali@cdac.in पर अवश्य भेजें, ताकि इस पत्रिका के आगामी अंक और अधिक सार्थक तथा आपकी आशाओं के अनुरूप बन सकें ।

सादर धन्यवाद,

कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति
सी-डैक, मोहाली

प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक)
इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की वैज्ञानिक संस्था, भारत सरकार
ए-34, औद्योगिक क्षेत्र, फेज-8, मोहाली-160071
टेलीफोन नंबर +91-172-2237052-55 फैक्स नंबर +91-172-2237050
www.cdac.in

कवर डिजाइन : सी-डैक मोहाली